टिप्पणी

17

भारत चीन युद्ध (1962)

भारत चीन युद्ध जिसे भारत-चीन सीमा विवाद भी कहते हैं 1962 में भारत व चीन के मध्य हुआ था। चीन द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के अनेक कारण थे। 1959 में भारतीय प्रधानमंत्री ने चीनी प्रधानमंत्री से मिलकर हिंदी चीनी भाई-भाई का नारा दिया था। इसके बाद भी चीन ने हमारा भरोसा तोड़कर हम पर अचानक आक्रमण कर दिया।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- भारत व चीन के मध्य सीमा विवाद का वर्णन कर सकेंगे;
- 1962 के भारत चीन युद्ध के मुख्य मुद्दों की पहचान कर सकेंगे और
- 1962 के भारत चीन युद्ध में हुई घटनाओं को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

17.1 भारत व चीन के मध्य की समस्या की उत्पत्ति

भारत व चीन के मध्य क्या समस्या थी?

- स्वतंत्रता के समय हमारे नेताओं ने विदेश नीति की घोषणा की थी जिसमें कहा गया था कि भारत व चीन दो समान व एशिया की महान शक्तियाँ हैं। चीन इससे असहमत था। वह एशिया का एकमात्र शक्ति बिंदु बनना चाहता था। इसलिए चीन ने पहले तिब्बत पर कब्जा करके चीन में मिला दिया। यह कार्य 1950 में किया गया था। 1959 में तिब्बती लोग जुल्म व अत्याचार से परेशान हो गए। उनके नेता दलाई लामा (तिब्बती लोगों के धर्म गुरु) एवं अनुयायियों को भारत ने शरण दे दी।
- सैन्य दृष्टि से भारत और चीन के बीच अरुणाचल प्रदेश में एक ब्रिटिश अधिकारी मैकमोहन रेखा द्वारा 1914 में सीमा रेखा खींची गई जिसे तिब्बत ने स्वीकार किया था। परंतु चीन इस सीमा रेखा को अस्वीकार करता है क्योंकि वह तिब्बत को स्वतंत्र देश नहीं मानता। और कहा कि तिब्बत सीमा पर कोई निर्णय नहीं ले सकता।

- इसी प्रकार लद्दाख क्षेत्र में भी भारत व चीन की सीमा रेखा जानसन नामक अंग्रेज द्वारा 1865 में निश्चित की गयी। चीन ने इसे भी स्वीकार नहीं किया।
- चीन ने अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में लद्दाख और अरुणाचल के सीमा विवाद को सैन्य बल से सुलझाने का प्रयास किया। सीमा विवाद युद्ध का कारण बना।

मानचित्र 17.1 में भारत-चीन सीमा पर ध्यान दीजिए। यह समस्या इसी सदी के शुरूआती दिनों की है। तिब्बत की स्वतंत्रता चीन द्वारा कभी स्वीकार नहीं की गई है। भारत की सीमा तिब्बत से लगी हुई थी परंतु चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के कारण यह सीमा भारत-चीन सीमा बन गई है।

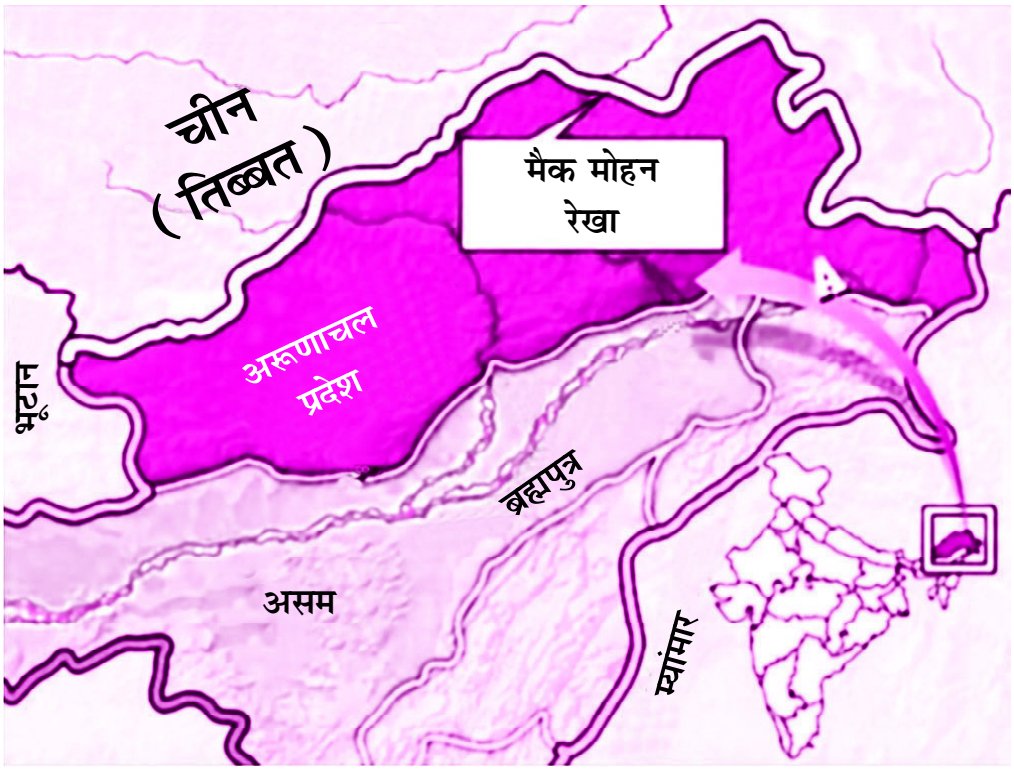

चित्र 17.1 : मैक मोहन रेखा जो भारत व चीन को विभाजित करती है।

पाठगत प्रश्न 17.1

1. भारत व चीन के मध्य 1914 में सीमा रेखा किसने बनाई?
2. भारत के किस राज्य में मैकमोहन रेखा को खींचा गया?

17.2 युद्ध के लिए जिम्मेदार घटनाएँ

17.2.1 चीन के साथ सीमा रेखा

1961 के युद्ध के लिए जो घटनाएँ जिम्मेदार हैं उन्हें जानने से पहले यह जानते हैं कि हमारी कौन-कौन सी अंतर्राष्ट्रीय सीमा चीन के साथ लगती है।

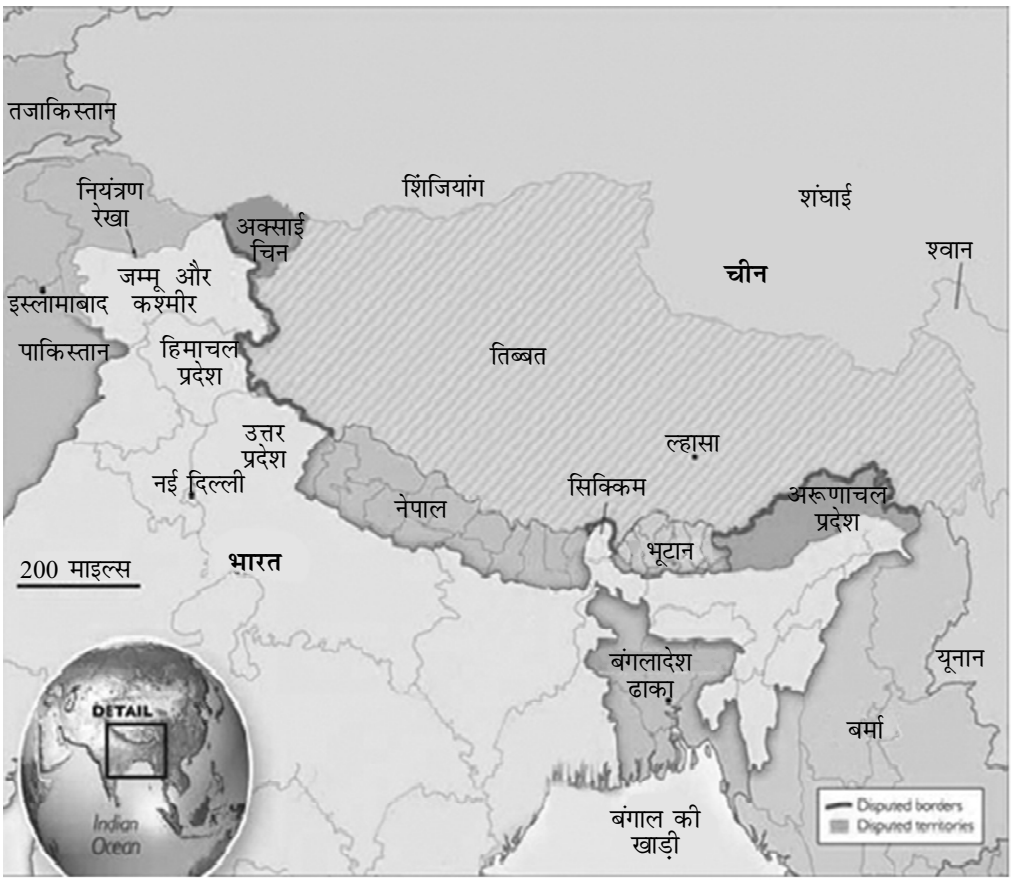

चित्र 17.2 : भारतीय-चीन सीमा

क्रियाकलाप 17.1

भारत चीन सीमा के मानचित्र पर उन राज्यों को अंकित करें जिनकी सीमा चीन से लगती है।

17.2.2 भारत चीन युद्ध की घटनाएँ

आइए अब उन घटनाओं को जानते हैं जिनके कारण भारत-चीन युद्ध हुआ।

- चीनी मानचित्र में भारत का 50,000 वर्ग मील का क्षेत्र अक्साई चिन का हिस्सा दिखाया गया है, जो चीन का भाग है। भारतीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इसके विषय में चीनी प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई से भी बात की थी और अपना विरोध दर्शाया था।

उस समय चीन के प्रधानमंत्री भारत के दौरे पर थे। चीन ने समस्या निराकरण का वादा तो किया परन्तु समस्या को हल नहीं किया।

- 1956 से चीन अक्साई चीन में सड़क बना रहा है। भारत इसका विरोध कर रहा है और इसको भारत पर आक्रमण मानता है।
- भारतीय सेना ने इस स्थान पर अतिरिक्त चौकियां भी स्थापित की हैं। यह कदम चीन की मौजूदगी व सड़क निर्माण को दृष्टि में रखकर उठाया गया है।
- जुलाई 1958 में चीन ने खुरनाक किले के पास लद्दाख के सीमा क्षेत्र में घुसने का प्रयास किया। ऐसा ही उन्होंने 1959 की गर्मियों में मिग्यीटुई व पैगांग झील के क्षेत्र में करने का प्रयास किया।
- 23 जनवरी 1959 को चीन ने सीमा रेखा को अस्वीकार करते हुए अक्साई चीन को अपना क्षेत्र कहा और सीमा रेखा को गलत कहा।
- 1959 में खाम्पा क्रांति हुई और दलाई लामा भारत में शरणार्थी के तौर पर आ गए। दलाई लामा का भारत में स्वागत हुआ। चीन को सीमा रेखा विवाद में दलाई लामा की भूमिका या तिब्बत के दखल से ऐतराज है।
- चीनी सरकार ने म्यांमार के साथ बनी मैकमोहन रेखा को भी अस्वीकार कर दिया। उसने इन राष्ट्रों को मान्यता ही नहीं दी। यह 1954 के समझौते का उल्लंघन है। चीन ने 50,000 वर्ग मील के क्षेत्र पर अपना दावा किया है।
- 1961 में भारत ने फारवर्ड पॉलिसी (Forward Policy) को अपनी विदेश नीति में शामिल किया और इसी के अनुसार अपनी सेनाओं व टुकड़ियों को तैनात किया।

पाठगत प्रश्न 17.2

1. लद्दाख के उस स्थान का नाम लिखिए जिस पर भारत व चीन के मध्य सीमा रेखा विवाद है?
2. 1959 में तिब्बत का कौन-सा नेता भागकर भारत आया था?
3. चीन ने किन राष्ट्रों के साथ सीमा रेखा समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं?

17.3 1962 के भारत-चीन युद्ध का सार

20 अक्टूबर 1962 को चीनी पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी ने थाग्ला रिज पर हमला किया जो असम में है। उस समय अरूणाचल प्रदेश का गठन नहीं हुआ था। इसलिए यह क्षेत्र असम के अंतर्गत आता था। 1962 का युद्ध दो स्थानों से लड़ा गया- पहला लद्दाख के अक्साई चिन से और दूसरा अरूणाचल प्रदेश से इसलिए इस युद्ध को दो सेक्टरों में लड़ा गया युद्ध भी कहते

हैं। सैन्य शब्दकोश के अनुसार 'सेक्टर' जिसे 'थियेटर' भी कहा जाता है, का तात्पर्य युद्ध के स्थलों से है। आपने इनके बारे में द्वितीय विश्व युद्ध वाले पाठ में पढ़ा है।

17.3.1 पश्चिमी सेक्टर

भारत ने यह युद्ध तीन तरफ से लड़ा। यह तीन क्षेत्र थे- लद्दाख का अक्साई चिन, असम (वर्तमान अरूणाचल प्रदेश) में थांग-ला और भारत-बर्मा (म्यांमार) सीमा क्षेत्र पर वालोंग। इस युद्ध में भारत को सेना, हथियारों और रसद सामग्री की कमी का सामना करना पड़ा। ऊँचे, पहाड़ी व ठंडों क्षेत्रों के हिसाब से पर्याप्त गर्म वस्त्र नहीं थे। इसके अलावा सेना के आवागमन के लिए सड़कें नहीं थी। चीनी सेना का संख्या बल भी अधिक था। उन्होंने सड़कों का निर्माण भी प्रारंभ कर दिया। पश्चिमी क्षेत्र में ये हमले दौलत बेग, ओल्डी, चुसुल और देमचोक क्षेत्र से हुए। चीन ने उन सभी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया जिन पर वह अपना दावा बता रहा था। लद्दाख के क्षेत्र की पूरी जानकारी जहाँ युद्ध हुआ था, आपको मानचित्र संख्या 17.3 में देखने को मिलेगी।

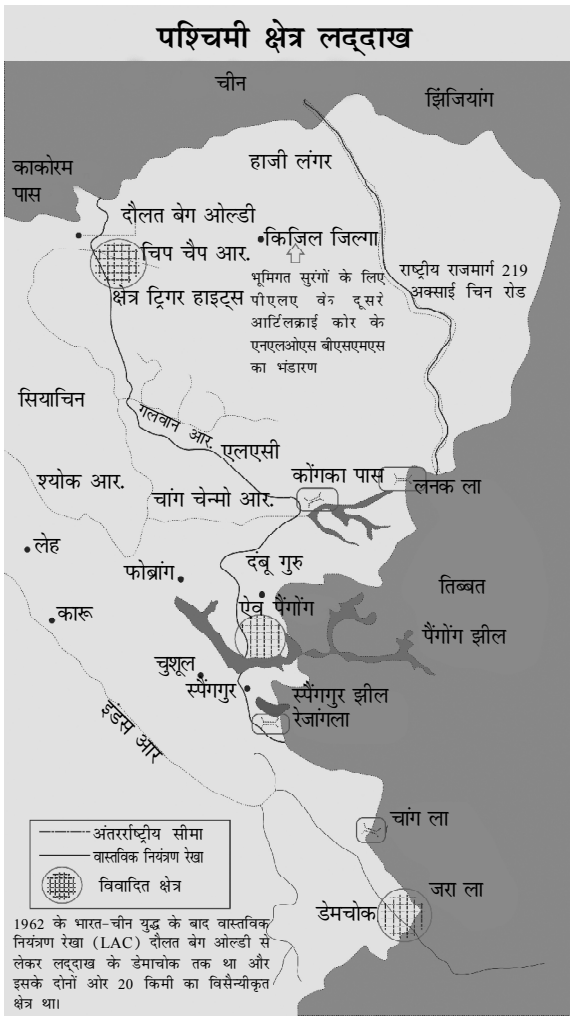

मानचित्र 17.3 : पश्चिमी सेक्टर में संचालन का क्षेत्र

13 कुमाऊँ रेजांगला एक पहाड़ी दर्रा है जो कि लद्दाख की चुसूल घाटी के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। यह क्षेत्र लगभग 3000 मीटर लंबा और 2000 मीटर चौड़ा है जिसकी औसत ऊँचाई 16,000 फीट है। ला का तिब्बती भाषा में अर्थ पहाड़ी दर्रा है। चीन ने रेजांग पर 18 नवंबर 1962 की सुबह 5 बजे हमला किया। 13 कुमाऊँ की एक कम्पनी ने मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में शत्रु सेना से लड़ने का प्रयास किया। इस कंपनी में 123 सैनिक थे। चीनी सेना में बहुत सैनिक थे किन्तु हमारे जवानों ने बम वर्षा और गोलाबारी करके काफी चीनी सैनिकों को मार डाला। दूसरा हमला सुबह 5.40 को 350 सैनिकों द्वारा किया गया। इनको भगा दिया गया और काफी सैनिक मारे गए। बार-बार हुए हमलों से दोनों देशों को जान माल की क्षति हुई। कुमाऊँ युद्ध में 123 में से 114 सैनिक मारे गए। मेजर शैतान सिंह को मरणोपरांत शौर्य का सबसे ऊंचा सम्मान परमवीर चक्र दिया गया। चुसूल में इन वीर सैनिकों की याद में स्मारक बनाया गया है।

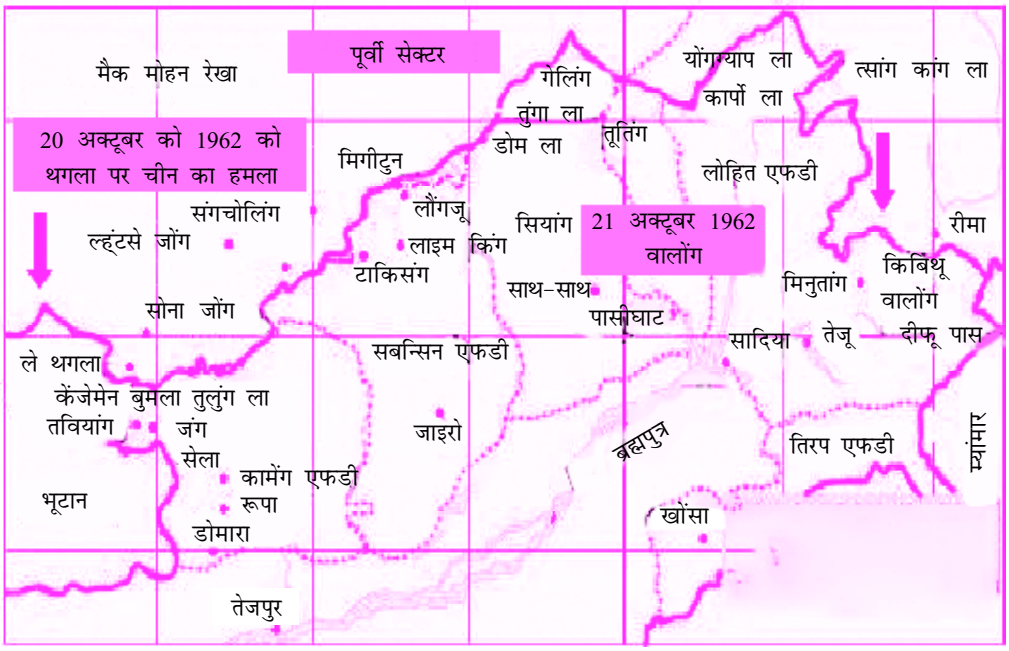

मानचित्र 17.4 : पश्चिमी सेक्टर में ऑपरेशन स्थल

17.3.2 पूर्वी सेक्टर

20 अक्टूबर को चीनी सेना ने थांगला और 21 अक्टूबर को वालोंग पर हमला किया। ये दोनों क्षेत्र तत्कालीन असम के अंतर्गत आते थे। सैनिकों की ज्यादा संख्या और भारी गोलाबारी में उन्होंने (चीनी) दोनों क्षेत्रों के काफी हिस्सों पर कब्जा कर लिया। भारतीय सेना के पास हथियार और प्रशिक्षित सैनिकों की कमी थी। चीन ने 24 अक्टूबर को गोलाबारी के चौथे दिन ही सीजफायर का प्रस्ताव रखा। किंतु वह वर्तमान नियंत्रण रेखा से ही फौजों को वापसी चाहता था। इसके लिए भारत ने मना कर दिया। मानचित्र 17.5 में आप उन स्थानों को देख सकते हैं जहाँ पर चीनी सेना ने असम (वर्तमान अरूणाचल प्रदेश) पर हमला किया था।

नवंबर के प्रथम सप्ताह में ही चीन ने भारत को पछाड़ दिया था। PLA (चीनी पीपुल्स आर्मी) ने अरूणाचल का अधिकतर भाग पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था। भारत ने अमेरिका से आपातकाल सैन्य सहायता माँगी। अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा ने भारत के निवेदन को स्वीकार किया। वे नेहरू के डर से चिंतित थे। नेहरू को यह डर था कि चीन भारत को उसके उत्तर-पूर्वी क्षेत्र से अलग करने का प्रयास कर रहा है। इन तीनों राष्ट्रों को मिलकर 3 नवंबर को सहायता भेजी। परंतु इस समय तक चीन ने ब्रिटेन के क्षेत्र के बराबर का हिस्सा कब्जे में कर लिया था। वालोंग के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में युद्ध का अलग माहौल था। भारतीय सेना ने 13 नवंबर को प्रतिरोध में हमला किया। किंतु चीन की युद्ध नीति और रणकौशल से भारतीय सेना अधिक समय तक इस जीत को नहीं बचा पायी। इसलिए भारतीय सेना को लोहित घाटी में वापिस आना पड़ा। 18 नवंबर तक चीन तेजपुर के बाहरी क्षेत्र तक पहुँच गए। चीन ने वहाँ पहुँचकर सीजफायर की घोषणा कर दी। तब से यही रेखा वर्तमान नियंत्रण रेखा है जहाँ दोनों देशों की सेना तैनात रहती है।

क्रियाकलाप 17.2

1962 के भारत चीन युद्ध में परमवीर चक्र विजेताओं के नाम ज्ञात कीजिए। मोर्चे पर उनके द्वारा दिखाई वीरता की संक्षिप्त कहानियाँ लिखिए।

17.3.3 सीमा युद्ध में हार के कारण

1962 के भारत-चीन युद्ध में भारत की हार मानी जाती है। किंतु यहाँ पर हमारे कुछ सैनिकों ने अपनी बहादुरी और शौर्य का प्रदर्शन किया था। प्रश्न यह उठता है कि हम यह युद्ध चीन से क्यों हारे? इसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे-

- चीनी सेना के संख्या बल व कुशल युद्ध नीति का भारतीय सैनिक मुकाबला नहीं कर पाए। हजारों की संख्या में आए चीनी सैनिकों ने हमला किया। उनके पास अत्याधुनिक हथियार और गोला बारूद था।
- भारतीय सेना को हवाई कवच नहीं मिल पाया।
- ऊँचे क्षेत्रों में आवश्यक कपड़ों की कमी और पुराने हथियारों के प्रयोग से भी भारत यह युद्ध हार गया।

पाठगत प्रश्न 17.3

1. भारत पर चीनी सेना ने आक्रमण कब किया था?
2. 1962 में चीन ने लद्दाख के किन तीन क्षेत्रों पर हमला किया था?
3. 1962 के भारत चीन युद्ध में किन पश्चिमी देशों ने भारत की मदद की थी?

आपने क्या सीखा

- भारत चीन के मध्य समस्या की पृष्ठभूमि।
- 1962 के भारत चीन युद्ध की मुख्य घटनाऐं।
- भारत की 'आगे देखो नीति' (Forward Policy) का प्रभाव।
- 1962 के भारत चीन युद्ध का सार।
- 1962 में भारत चीन युद्ध में भारत की हार के कारण।

पाठांत प्रश्न

1. भारत व चीन के मध्य समस्याओं की उत्पत्ति के बारे में स्पष्ट कीजिए
2. भारत के किस राज्य की सीमा चीन के साथ लगती है?
3. 1962 के भारत चीन युद्ध की मुख्य घटनाएँ लिखिए।
4. 1962 के भारत चीन युद्ध में भारत की हार के मुख्य कारण क्या थे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

1. सर हेनरी मैकमोहन
2. अरूणाचल प्रदेश

17.2

1. लद्दाख का अक्साई चिन
2. दलाई लामा
3. पाकिस्तान और म्यांमार

17.3

1. 20 अक्टूबर 1962
2. दौलत बेग ओल्डी, चुसुल और देमचोंग
3. अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा